



भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ । याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ।।  
श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वती जी और श्री शंकर जी की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके बिना सिद्धजन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते ।

श्रीरामचरितमानस 1 / 2

## स्वागत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/32766 दिनांक 29.4.2022 के अनुसार डॉ. (सुश्री) सृष्टि जैन ने 25.4.2022 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-2/2022/35043 दिनांक 2.05.2022 के अनुसार डॉ. (सुश्री) सुरभि कोहली ने 2.05.2022 से संस्थान के जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/35612 दिनांक 4.05.2022 के अनुसार डॉ. बिनायक सेन ने 2.05.2022 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/35359 दिनांक 4.05.2022 के अनुसार डॉ. सौविक बिस्वास ने 2.05.2022 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-

II/2022/34781 दिनांक 29.4.2022 के अनुसार श्रीमती हेमा कुमारी (26883) ने संस्थान में प्रत्यक्ष भर्ती आधार पर कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।

- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-II/2022/36892 दिनांक 9.5.2022 के अनुसार श्री पवनन पी.वी. ने 4.5.2022 से संस्थान के डिजाइन विभाग में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।

## त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/32445 दिनांक 29.4.2022 के अनुसार डॉ. प्रमोद रत्नाकर खाडिकर, विजिटिंग संकाय (डिजाइन विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था । जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 20.4.2022 से स्वीकार कर लिया है । अतः डॉ. प्रमोद रत्नाकर खाडिकर को 20.4.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/30252 दिनांक 4.5.2022 के अनुसार प्रो. अरुण कुमार, विजिटिंग संकाय (ऑप्टिक्स एवं फोटोनिक्स केन्द्र) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था । जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 23.4.2022 से स्वीकार कर लिया है । अतः प्रो. अरुण कुमार को 23.4.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है ।

## सम्पादकीय

मई माह तीन विशेष त्यौहारों—अक्षय तृतीया, ईद—उल—फितर एवं परशुराम जयन्ती, से प्रारम्भ हुआ । वास्तव में नवरात्र के साथ भारतीय नव वर्ष तथा रमजान का महीना, प्रकृति के *Unification* का उद्भव है । कैम्पसवासियों को इन सभी की हार्दिक शुभकामनायें !

4 मई को सेमिनार हाल में आयोजित प्रोग्राम “*The Future of Food and Agriculture*” में *Purdue Univ, USA* के विद्वान वैज्ञानिकों के विचार सुनने का अवसर मिला । प्रसन्नता हुई कि उन्होंने कृषि उत्पादन के साथ अनाज भण्डारण को भी महत्व दिया । भोजन के बारे में प्रस्तुत उनकी अभिव्यक्ति ने हृदय को झकझोर दिया । *Genetic Engg.* पर आधारित कृषि व्यवस्था पर्याहितैषी नहीं बल्कि *Ecological-Social* जोखिम से भरी है । यह भारत वर्ष के छोटी जोत (*small and dispersed land holding*) के किसानों के अनुकूल नहीं है । हरित क्रांति से बढ़ी अनाज (मुख्यतया गेहूँ व चावल) की पैदावार के साथ गरीब—अमीर सभी को यथासंभव पौष्टिक भोजन मिले, सबका स्वास्थ्य अच्छा रहे, इसके लिये आवश्यक है कि *post harvest processing* से प्राप्त भोजन की *Holistic Quality* बरकरार रहे । जैसे *brown rice* व *wholewheat* आटा, मोटा अनाज के आदि से ही सभी पोषक तत्वों की पूर्ति आसानी से हो सकती है । *Fortified rice* तथा *branded* सस्ता आटा समस्या का समाधान नहीं है । ‘भारत की खुराक की समस्या’ पुस्तक में महात्मा गांधी ने इस तथ्य पर स्पष्ट रूप से चर्चा की है ।

आइये मिलकर इस दिशा में चिन्तन—मनन करके सही वैज्ञानिक समाधान तलाश करें !

—प्रो. सन्तोष सत्या

## आजादी का अमृत महोत्सव

### शक्ति का हो सही उपयोग



स्वाधीनता आंदोलन में सामाजिकता और परस्पर समानता का क्रांतिबीज रोपित किया था आचार्य विनोबा भावे ने। भूदान आंदोलन (प्रारंभ 18 अप्रैल 1951) के जरिए असंख्य भूमिहीन किसानों के लिए स्वावलंबन का स्वप्न पूरा करने वाले विनोबा भावे ने सुझाए थे नैतिक समाज के नियम.....

मनुष्य जीवन का ध्येय है परम् साम्य की प्राप्ति। 'अभिधेयं परम् साम्यम्'। अभिधेय कुल जीवन के चिंतन का विषय है। जिस दिशा में जीवन के समूचे चिंतन को ले जाना है, जिसमें चिंतन सर्वस्व लगाना है, इंद्रियों को मोड़ना है, जिसको लक्ष्य करना है, उसी को 'अभिधेय' कहते हैं। हमारा अभिधेय 'परम् साम्य' है। परम् साम्य केवल आर्थिक या सामाजिक वस्तु नहीं रहती। इन दोनों से बढ़कर एक साम्य है, मन का संतुलन या मानसिक साम्य, लेकिन इन तीनों से भी परे एक चीज है, जो 'परम् साम्य' कहलाती है। परम् साम्य यानी ब्रह्म। इसलिए हमारा अभिधेय ब्रह्म प्राप्ति हुआ।

हमें आर्थिक, सामाजिक या मानसिक साम्य स्थापित करना है। उन्हें स्थापित करने से उस परम् साम्य का दर्शन होगा, जो पहले से ही मौजूद है, किंतु हमारे अंधत्व के कारण दिखता नहीं था। हमने गीता को साम्ययोग नाम दिया है और बताया है कि परम् साम्य की प्राप्ति हमारा लक्ष्य है। परम् साम्य यानी जहां

जड़-चेतन का भेद भी नहीं रहता है। साम्ययोग मानव-मानव में भेद नहीं करता।

प्रत्येक मनुष्य में समान आत्मा है, इसलिए सबको जीने के समान असर भी मिलने चाहिए। व्यक्ति की बौद्धिक योग्यता को देखे बिना हम उसे जमीन, मकान, रोटी, आरोग्य, शिक्षा आदि जीवन के साधन मुहैया करें, यह आज के युग की और प्राचीन अद्वैत के सिद्धांत की मांग है। हम लोग सत्य विचार पर समाज की रचना करना चाहते हैं। भगवान ने हमें जो बुद्धि, शक्ति और दौलत दी है, वह समाज की सेवा के लिए है। उसका स्वतंत्र भोग करना उचित नहीं। समाज को समर्पण करने के बाद ही हम उसे भोग सकते हैं। उपनिषद् में कहा गया है कि यह समस्त जगत ईश्वरमय है और समर्पण करके ही प्रसाद के रूप में उसका भोग करना चाहिए।

अपनी बुद्धि के मालिक हम नहीं, भगवान हैं और चूंकि हमारे सभी गुण समाज के लिए हैं इसलिए हमें चाहिए कि अपने पास की सारी शक्तियों को ईश्वर की देन मानें और समाज को अर्पण कर दें। हम तो अपने शरीर के भी मालिक नहीं, उसके ट्रस्टी मात्र हैं। साम्ययोग कहता है कि संपत्ति किसी भी रूप में क्यों न हो, उसके मालिक हम नहीं हैं। तुलसीदास जी ने यही कहा है, 'संपत्ति सब रघुपति के आम्ही' हर संपत्ति ईश्वर की है।

आज तक लोग अपने को संपत्ति का मालिक मानते आए। उसमें हितों का विरोध निर्मित होता है। किंतु जहां 'ट्रस्टीशिप' का विचार आता है, वहां पूरी वैचारिक क्रांति होती है। हमारे पास जितनी भी शक्तियां हैं, समाज की सेवा के लिए हैं, व्यक्तिगत स्वार्थ साधने के लिए नहीं। समाज के हित के लिए सतत् प्रयत्न करना ही हमारा स्वार्थ है।

मेरी विचारधारा के मुख्य चार अंग हैं। एक है उद्देश्य, जिसे मैंने नाम दिया है 'साम्ययोग'। दूसरा है तत्त्वज्ञान। तत्त्वज्ञान में मैं समन्वय चाहता हूं। तीसरा है सामाजिक, आर्थिक ध्येय। यह है 'सर्वोदय' और उसे अमल में लाने की जो पद्धति है, वह है 'सत्याग्रह'।

'सत्याग्रह' जीवन पद्धति है। उसके आधार पर जो समाज रचना खड़ी होगी, वह 'सर्वोदय' होगा। उसके लिए दुनिया में जो भिन्न-भिन्न चिंतन व तत्त्वज्ञान चलते हैं, उनके बीच का विरोध टालकर 'समन्वय' करना होगा। यह सिद्धांत सभी विवादों को खत्म करने वाला है। इन तीनों के फलस्वरूप व्यक्तिगत तथा सामाजिक चित्त की समता प्राप्त होगी। उसे मैंने 'साम्ययोग' नाम दिया है। साम्ययोग गीता का शब्द है, समन्वय वेदांत का है और सर्वोदय शब्द आधुनिक विज्ञान का है, जो पश्चिम से प्राप्त हुआ है। हमने अहिंसा की शक्ति से स्वातंत्र्य प्राप्त किया है, किंतु यह निश्चित समझिए कि अब हम अगर दूसरा कदम, आर्थिक, सामाजिक समानता कायम करने का नहीं उठाते तो हमारा स्वातंत्र्य खतरे में है।

समाज में उच्च-नीचता के भेद रहें, तो समाज बनता ही नहीं। हम समाज को नैतिक समाज बनाना चाहते हैं, जिसमें हर व्यक्ति अपनी शक्ति समाज को समर्पित करेगा। स्वराज्य के बाद हमें साम्ययोग की स्थापना का आदर्श सामने रखना होगा। इसी को हमने सर्वोदय कहा है। साम्ययोग के कारण आर्थिक क्षेत्र में भी क्रांति होती है। नैतिक मूल्यों के समान आर्थिक क्षेत्रों में भी श्रम का मूल्य समान होना चाहिए। आज शारीरिक काम की अपेक्षा बौद्धिक काम की मजदूरी ज्यादा दी जाती है। उसकी प्रतिष्ठा भी ज्यादा होती है, लेकिन इस तरह का फर्क बिल्कुल बेबुनियाद है। चूंकि साम्ययोग का विचार आत्मा की समता पर निर्भर है, इसलिए आर्थिक क्षेत्रों में भी वह कोई भेद स्वीकार नहीं कर सकता। समाज में हर एक की सेवा का प्रकार भिन्न हो सकता है, पर उसका आर्थिक मूल्य समान ही होना चाहिए। इसी तरह राजनैतिक क्षेत्र में भी हमारे मूल्य बदल जाएंगे। हम न सिर्फ शोषणरहित, बल्कि शासनमुक्त समाज की रचना चाहते हैं। साम्ययोग की कल्पना के अनुसार, शासन गांव-गांव में बट जाएगा। यानी गांव-गांव में अपना राज होगा, मुख्य केंद्र में नाममात्र के लिए सत्ता होगी। इस तरह हम शासनमुक्त समाज की ओर बढ़ेंगे।

साम्ययोग आर्थिक, नैतिक, राजनैतिक

और सामाजिक क्षेत्रों में परिवर्तन लाना चाहता है। इसी को क्रांति कहते हैं। आजकल लोग हिंसा को ही क्रांति समझते हैं। किंतु जहां बुनियादी चीजों में क्रांति नहीं, वहां ऊपर-ऊपर के परिवर्तन को क्रांति कहना गलत होगा। क्रांति तभी होती है, जब हम अपने नैतिक जीवन में परिवर्तन करते हैं। क्रांति तब होती है, जब उसका त्रिकोण होता है। प्रथम व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन होता है।

फिर विचार परिवर्तन होता है और फिर समाज परिवर्तन होता है। ये तीन जब होते हैं तब क्रांति होती है।

भूदान यज्ञ का पहला कदम है 'दान' और अंतिम कदम है 'न्यास'। दान का अर्थ है देना, 'संविभाग' यानी अपने पास जो चीज है, उसका एक हिस्सा समाज को देना। नित्य दान किसी खास मौके पर करने का धर्म नहीं, सतत् करने का है।

'न्यास' में मालिकी का पूरा विसर्जन है। मैं अपने पास संग्रह रखूंगा ही नहीं। जो कुछ होगा गांव को दे दूंगा। फिर समाज की तरफ से मुझे जो मिलेगा, वह मैं लूंगा। मैं नारायणाश्रित बनूंगा। न्यास यानी समाज में लीन हो जाना, व्यक्तिगत मालिकी मिटाकर समूह की शरण लेना।

(साभार—विनोबा साहित्य खंड 13,15 से)  
दैनिक जागरण—17 अप्रैल, 2022

## आत्मसंयम रखिए, बीमारी से बचिए

डॉ. अखलेश भार्गव

विशेषज्ञ, अष्टांग आयुर्वेद कॉलेज इंदौर

आज हम सभी इलाज के मद में काफी धन बर्बाद करते हैं अगर ऐसा हो जाए कि हम बीमार ही न हों तो हमारे धन की यह बर्बादी रुकेगी। उसका इस्तेमाल हमारे कल्याण के अन्य रूपों में किया जा सकता है। इसका एक ही मंत्र है आत्मसंयम।

अगर सरकार देश के स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए एक ऐसा रोडमैप तैयार करने की ओर अग्रसर है जिसके तहत अगले कुछ वर्षों में सभी को सस्ता और सुलभ स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराई जा सके। सरकार के इस लक्ष्य को हमारी इच्छाशक्ति की आक्सीजन अगर मिल जाए तो देश यह अहम पड़ाव तय समय से कहीं पहले हासिल कर सकता है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते अगर हम अपनी जीवनशैली इस तरह का लें कि बीमारी हमें छू ही न सके तो अनावश्यक इलाज के दुष्प्रभाव से खुद सहित देश को भी बचाया सकता है।

वर्तमान दौर में जैसे-जैसे मानव जीवन के लिए सुविधाएं बढ़ती जा रही हैं, मुनष्य का शरीर रूग्ण होता जा रहा है। प्राकृतिक ताजी हवा को छोड़ एसी की धात्विक टंडक में रहने वाले शरीर को अब पसीना बहाए महीनों हो जाते हैं। ऐसे में रूग्णता, कमजोरी, शिथिलता और बीमारी तो घेरेगी ही। शरीर बीमारियों का घर बन रहा है और इसके पीछे एक बड़ी वजह जीवन में आत्मसंयम का खत्म होना है।

प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है, किंतु आत्मसंयम का पालन नहीं करता। मुझसे अक्सर लोग पूछते हैं कि स्वस्थ और सुखी कैसे रहा जा सकता है? मैं इसका एक ही मूलमंत्र उन्हें देता हूँ—आत्मसंयम रखो। यदि हम अपने शरीर, मन, चित्त, अंतःकरण में आत्मसंयम का सिद्धांत लागू कर लें तो हम कभी बीमार नहीं होंगे।

आत्मसंयम कोई राकेट साइंस नहीं कि आसानी से समझ में न आए। इसकी सरल परिभाषा है कि स्वयं को संयमित करके, इंद्रियों को नियंत्रित करके रहना सीखें। हमारे शास्त्रों ने संयम को स्वास्थ्य और सुख का सबसे बड़ा उपाय बताया है। 'त्येन त्यक्तेन भूंजीथा' सदियों से भारत के लोगों का जीवन—मंत्र रहा है। इसका अर्थ है कि जो भी भोगो, उसे त्याग की दृष्टि से भोगों अर्थात् उसमें लिप्त मत हो, जाओ। सरल शब्दों में कहें तो भोजन, शयन, मैथुन से लेकर दिनचर्या की हर गतिविधि को नियंत्रण में रखो। आहार—विहार में पथ्य—अपथ्य का ध्यान रखें। एक निश्चित अंतराल में उपवास करो, इंद्रियों पर संयम रखो, मन को भटकने मत दो।

प्रत्येक मनुष्य का आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य नियंत्रित रूप में होना चाहिए, तभी व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है। भोजन के रूप में शाहाकारी व जल्दी पचने वाला भोजन लें। मांसाहार, अधिक मसालों का प्रयोग, गरिष्ठ भोजन शरीर पर गहरा कुप्रभाव डालते हैं, इसलिए इनके उपयोग से बचें। संतुलित मात्रा में किए गए शाकाहारी भोजन से नुकसान की आशंका

नहीं रहती। भोजन सूर्योदय के तीन घंटे पश्चात ही करें ताकि शरीर भोजन को पचाने की स्थिति में आ जाए। इसी तरह सूर्यास्त के बाद भोजन न करें क्योंकि तब जठराग्नि (पेट में बनने वाले रसायन, जो भोजन पचाती हैं) मंद होती है।

देह, मन व चित्त में पलने वाले तनाव का ताला भी आत्मसंयम की कुंजी से खोला जा सकता है। वस्तुतः स्वस्थ रहने के लिए मन को तनावमुक्त रखना सबसे आवश्यक है। शरीर में जब कोई तनाव होता है, तो निश्चित ही उसका कुप्रभाव मन पर पड़ता है। अतः मन को स्वस्थ रखने के लिए शरीर और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आत्मसंयम जरूरी है। योग व प्राणायाम इसमें चमत्कारिक रूप से सहायक सिद्ध होते हैं। योग, प्राणायाम से शरीर में आक्सीजन की मात्रा बढ़ती है।

—साभार: दैनिक जागरण  
(16 मई, 2022)

## नाम परिवर्तन

स्थापना अनुभाग—II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/2022/36653 दिनांक 9.5.2022 के अनुसार श्री बिजेन्द्र सिंह, कनिष्ठ सहायक (27188) को सक्षम प्राधिकारी ने उनके सर्विस रिकार्ड में उनका नाम "श्री बिजेन्द्र सिंह रावत के रूप में परिवर्तित करने की अनुमति प्रदान की है। अतः भविष्य में वह श्री बिजेन्द्र सिंह रावत के नाम से जाने जाएंगे।



## संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वर्ष 2022-2023 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	“क” क्षेत्र	“ख” क्षेत्र	“ग” क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1.क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2.क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3.क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4.क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेसन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं एवं सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना।	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./नि.दे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 02 बैठकें वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति मित्ताही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिन्दी में हो	40%	30%	20%

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाष: EPABX 7144